

Title: Need to provide GI (Geographical Indication) to the Makrana Marble of Rajasthan.

**डॉ. ज्योति मिर्धा (नागौर):** सभापति महोदय, मैं अपने संसदीय क्षेत्र नागौर के मकराना शहर की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ जो अपने मार्बल के लिए सदैव विश्व प्रसिद्ध रहा है। मकराना मार्बल की खासियत पूरे संसार में फैली हुई है। विश्व प्रसिद्ध इमारतें जैसे आगरा का ताजमहल, कोलकाता का विक्टोरिया मेमोरियल से लेकर दिलवाड़ा के विश्व प्रसिद्ध जैन मंदिरों तक अनगिनत इमारतें, मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों में मकराना मार्बल शोभा बढ़ा रहा है। भूगर्भ शास्त्रियों व पत्थर के जानकारों का मत है कि मकराना का मार्बल विश्व में सबसे पुराना व सबसे बेहतरीन किस्म का है। यह 90 प्रतिशत से ज्यादा शुद्ध कैल्शियम कार्बोनेट है, जिसमें पानी की सीपेज बिल्कुल नहीं होती। यह बहुत कठोर होते हुए भी गढ़ाई के लिए सर्वोत्तम है। इसकी सतह पर एक भी पिनहोल या स्क्वेज बहुत कम होते हैं, जिसकी वजह से यह सीधे ही उपयोग किये जाने योग्य होता है। इसकी खासियत है कि इसमें किसी किस्म के कैमिकल की जरूरत नहीं पड़ती और सदियों बाद भी इसकी सफेदी बनी रहती है। मकराना में लगभग 56 मिलियन टन मार्बल का भंडार है, जिससे लाखों लोग अपना रोजगार पूरे भारत में ही नहीं, दूसरे देशों में भी चलाते हैं। इससे हर साल करोड़ों रुपये का रिवेन्यू प्राप्त होता है।

महोदय, इन सब विशेषताओं के बाद भी आज मकराना मार्बल अपने आस्तित्व के लिए जूझ रहा है। मकराना मार्बल उद्योग की सबसे बड़ी परेशानी उसके स्क्वैप के डिस्पोजल से लेकर उसके नाम से नकली मार्बल बेचे जाने तक की है।

मेश सदन के माध्यम से आग्रह है कि इतनी सारी खूबियों और मकराना मार्बल के नाम से अन्य मार्बलों को बेचे जाने से रोकने के लिए आवश्यक है कि मकराना मार्बल को जियोग्राफिकल इंडीकेशन दिया जाये, जिससे मकराना मार्बल की विश्व-प्रसिद्धि बरकरार रहे और इससे एक सामूहिक, सामुदायिक अधिकार की प्राप्ति मकराना को प्राप्त हो सके।